आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां अंक : आठवां दिसम्बर–2014

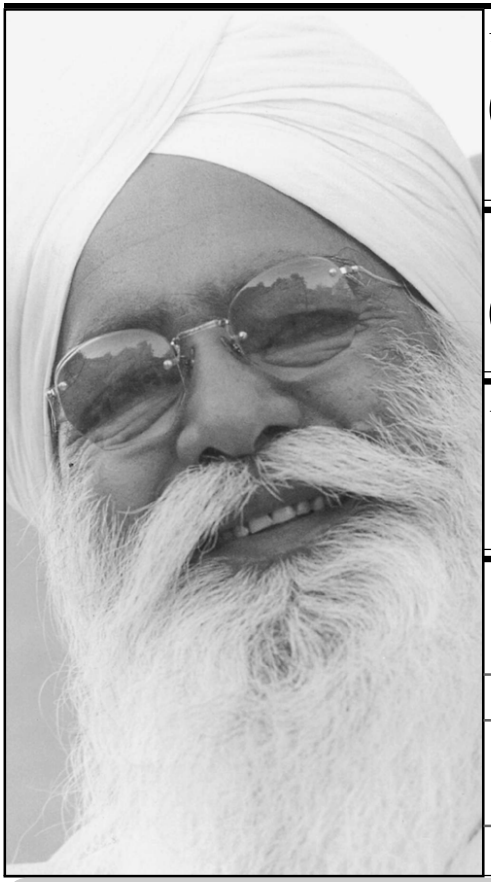

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

5 **पूर्ण महात्मा**
(सहजो बाई की बानी)
मुम्बई

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

25 **सन्त कल्लरपट**

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

27 **भाई केहर सिंह**

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक-नन्दनी

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2014 –153– मूल्य – पाँच रुपये

सावन गुरु कृपाल जी

सावन गुरु कृपाल जी, दाते दीन दयाल जी,
असीं रक्खियां आसां तेरियां, रूहां अपणियां आप संभाल जी, (2)

1. सानूं दे के सहारा बचा लवो, तुसीं अपणे चरनी ला लवो, (2)
असीं जूनां फिरियां बथेरियां, साडा कट दो चौरासी दा जाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

2. जाल मन उत्ते माया दा पै गया, इक तेरा ही सहारा रह गया, (2)
होर ढाईयां सब्बे ढेरियां, देवो आसरा दीन दयाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

3. असीं पापी अवगुणहारे जी, बुरे फस गए हां जीव विचारे जी, (2)
तूं मालिक असीं हां चेरियां, साडी करयो आप संभाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

4. तेरे हां पर पापां ने घेरे हां, भले हां बुरे हां पर तेरे ही हां, (2)
करे अरजां 'अजायब' प्यारेया, सुणयो सतगुरु कृपाल जी,
सावन गुरु कृपाल .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पूर्ण महात्मा

सहजो बाई की बानी

मुम्बई

सावन-कृपाल के चरणों में बारम्बार नमस्कार करते हैं जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर बहुत रहम किया। हुजूर सदा कहा करते थे, ''अंधे की ताकत नहीं कि सुजाखे को पकड़ ले।'' शिष्य में भी यह ताकत नहीं कि वह गुरु को समझ ले या उससे मिल ले; यह तो गुरु का ही चुनाव होता है। गुरु को पता होता है कि किसके अंदर तड़प है परमात्मा ने किसका फैसला किया हुआ है कि अब इसे दोबारा जन्म नहीं देना, दुखी संसार में नहीं भेजना।

जीव अंधा है परमात्मा सुजाखा है। **पूर्ण महात्मा** के लिए दूर या नजदीक का फर्क नहीं पड़ता। कई बार महात्मा प्रेमी को अपने पास बुलाने के लिए कोई जरिया बना लेते हैं, अपने बारे में जानकारी दे देते हैं। वे खुद भी कई बार प्रेमियों के पास चले जाते हैं। आमतौर पर हमें ऐसे वाक्यात देखने को मिलते हैं।

जब क्राईस्ट से पूछा गया कि आप दिन-रात मारे-मारे क्यों फिरते हैं आपकी कौन सी वस्तु खो गई है? क्राईस्ट ने कहा, ''मेरी भेड़े गुम हो गई हैं मैं उनकी तलाश में फिरता हूँ।'' आत्मा को भेड़ कहकर बयान किया गया है। पल्टु साहब कहते हैंः

उन्हें क्या है चाह फिरत हैं मुल्क बथेरा, जीव तारण कारणे सहंदे दुख बथेरा।

इस भेड़ को भी खुद परमात्मा कृपाल ने दया करके घर में आकर दर्शन दिए। मैं उनकी क्या महिमा करूं! मैंने सदा ही आपके आगे कहा, ''मैं तिल-तिल का अपराधी हूँ। रती-रती का चोर हूँ। मैं पल-पल के गुनाहों का भरा हुआ हूँ। मैं तेरी शरण में आया हुआ हूँ तू मुझ पर मेहर कर, मेरी लाज रख ले।''

सन्त गरीब नवाज होते हैं। जो गरीब बनकर उनके दर पर जाता है, फरियाद करता है वह जरूर सुनते हैं उसकी लाज रखते हैं। क्या हम अंदर मन से सब कुछ कहते हैं या दिखावे के लिए जुबान से इतना कुछ कह रहे हैं? बाहर की नम्रता दिखावे की होती है, सच्ची नम्रता अंदर से होती है। करण-कारण गुरु का मालिक के साथ मिलाप हो चुका होता है वह दिलों की जानता है उसे पता है कि यह अंदर से बोल रहा है या बाहर से बोल रहा है; वह दिखावे पर नहीं रीझता।

कल के सतसंग में सहजो बाई ने प्यार से समझाया कि गुरु ने मुझे उस देश में पहुँचा दिया जहाँ चींटी पैर नहीं टिका सकती, वहाँ सरसों का दाना भी नहीं टिक सकता। सतगुरु ने मुझे उस देश में बसा दिया जहाँ मौत-पैदाईश नहीं।

एक पंडित ने अपना नाम सर्वजीत रखवाया था। उस जमाने में आज की तरह जीप, कार, बस, ट्रेन और हवाई जहाज के साधन नहीं थे। उस समय ज्यादातर लोग बैल की सवारी करते थे। कबीर साहब की दूर-दराज में बहुत चर्चा थी। पंडित सर्वजीत बैल पर किताबें लादकर कबीर साहब से बहस करने के लिए गया। कबीर साहब को पता लगे कि यह कितनी किताबें पढ़ा हुआ है। उस समय कबीर साहब घर में नहीं थे, कमाली घर में थी। सर्वजीत ने पूछा, ''कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहाः

कबीर का घर आसमान पे यहाँ सिलहली गैल,
पाँव न टिके पपील का पंडित लादे बैल।

क्या तू कबीर साहब को मनुष्य समझता है? उनका घर तो सच्चखंड है। वहाँ तो चींटी भी पैर नहीं टिका सकती। तू किताबों के बैल लादकर फिर रहा है। यह दोहा कबीर साहब का बोला हुआ

नहीं है, कमाली का उचारा हुआ है। कबीर साहब ने खुद भी अपनी बानी में जिक्र किया हैः

दिन स्यों रैण वेद नहीं शास्त्र, यहाँ बसे निंरकारा।
कहे कबीर नर तिसे ध्यावो, बाबरया संसारा।।

आप कहते हैं वहाँ कोई वेद-शास्त्र नहीं न कोई पढ़ने और पढ़ाने वाला है, वह तो कुलमालिक का देश है। सन्त परमात्मा की भक्ति करके भक्ति रूप हुए होते हैं जो भी उनके संपर्क में आता है उसे भी भक्ति का दान देते हैं बल्कि वहाँ पहुँचने में उसकी पूरी मदद करते हैं। सहजो बाई का शब्द गौर से सुनेंः

सहजो गुरु बहुतक फिरैं, ज्ञान ध्यान शुधनाँह।
तारि सके नहीं एक कौ, गहैं बहुत की बांह।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप यह मत सोचें! उस स्कूल में बच्चे ज्यादा पढ़ते हैं वहाँ ज्यादा भीड़ है वह स्कूल अच्छा है। आप यह देंखें! किस स्कूल के ज्यादा बच्चे पास होते हैं?''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''भीड़ को देखकर यह सबूत नहीं मिलता कि यह महात्मा पूरा है। **पूर्ण महात्मा** का तब पता लगता है जब पूरा शिष्य उसके पास जाता है। अधूरा गुरु पूरे शिष्य को देखकर भागता है कि अब यह कुछ मांगेगा।'' जहाँ पूरे गुरु की महिमा गाई है वहाँ पूरे शिष्य की भी महिमा गाई है।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में एक कहानी सुनाया करते थे कि एक महात्मा चला जा रहा था। किसी इंसान ने महात्मा से कहा कि देखों महात्मा जी! गायों का कितना बड़ा झुंड जा रहा है। महात्मा ने प्यार से पूछा, ''तेरा उसमें क्या है?'' उसने कहा, ''उस झुंड में मेरा अपना तो कुछ नहीं मेरे ताये का बछड़ा है।''

कहने का भाव अगर किसी जगह ज्यादा भीड़ है तो उसमें हमारा कितना हिस्सा है?

महाराज जी हरिद्वार की मिसाल दिया करते थे कि वहाँ पचास लाख से भी ज्यादा लोग इकट्ठे हो जाते हैं लेकिन वहाँ ईर्ष्या, लड़ाई-झगड़ा होता है। सब एक-दूसरे को नीचा दिखाते हैं। नागे कहते हैं कि हमारी सवारी पहले निकले। सन्यासी कहते हैं कि हमारी सवारी पहले निकले। बस! इसी तरह के झगड़े होते हैं अगर वहाँ कोई मालिक का प्यारा हो तो इतने सारे भेष क्यों बनें, इतनी ईर्ष्या क्यों हो?

अब सवाल यह उठता है कि उतने शिष्य नहीं जितने गुरु मिलते हैं। हमारे दिलों में विश्वास नहीं होता कि इतनों में गुरु कौन है? ऐसा ही सवाल महाराज सावन सिंह जी से भी किया गया था कि सन्तों को अपनी कोई निशानी रखनी चाहिए। आपने हँसकर कहा, ''क्या सन्त माथे पर बोर्ड लगाएं कि हम सच्चे हैं।''

पूर्ण महात्मा को लोग कितना मानते हैं। इस दुनिया के लोगों ने किसी पूर्ण सन्त की खाल उतरवा दी। किसी को जीते जी सूली पर चढ़ा दिया। किसी को तपते हुए तवे पर बिठा दिया। हम लोगों ने पूर्ण सन्तों की कितनी कद्र की? जिन रूहों का दरगाह में फैसला हो जाता है सन्त उन्हीं को संदेश देने के लिए आते हैं।

बानी में बार-बार पूरे महात्मा और अधूरे महात्मा की महिमा गाई है। जहाँ पूरे का जिक्र आता है वहाँ अधूरे का जिक्र भी आता है। **पूर्ण महात्मा** बाहर कोई भी आडंबर करके नहीं दिखाता। वह खुद 'शब्द-नाम' की कमाई करके शब्द-रूप हुआ होता है, वह सतपुरुष के पास पहुँचकर सतपुरुष का ही रूप हुआ होता है।

प्यारेयो! यह एक सच्चाई है कि **पूर्ण महात्मा** भूलकर भी किसी की निन्दा नहीं करता। वह हर एक की तारीफ करता है यही उस महात्मा की निशानी होती है। उसके अंदर ईर्ष्या-जलन नहीं होती। वह विषय-विकारों से ऊपर होता है। जहाँ एक-दूसरे की निन्दा होती है तो आप समझ लें कि वहाँ आपका बिताया गया वक्त बेकार है। महात्मा न खुद निन्दा करते हैं न अपने सेवकों को ही निन्दा करने की इज़ाज़त देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सच्चा वक्त की इंतजार में होता है कि वक्त अपने आप ही बता देगा। झूठा और अधूरा अपनी सच्चाई पेश करने में ही लगा रहता है।''

महाराज जी दादू दयाल की कहानी सुनाया करते थे कि दो पंडित दादू दयाल जी से उपदेश लेने के लिए गए। दादू दयाल बहुत ही दयालु और शान्त चित्त **पूर्ण महात्मा** थे। दादू जी डेरे से बाहर जा रहे थे उनका सिर गंजा था। आमतौर पर घर से निकलते हुए अगर किसी ने छींक मार दी या कुत्ते ने कान हिला दिए तो घर से निकलते नहीं बैठ जाते हैं कि अपशगुन हो गया है।

ऐसा मैं अपने पिता के अंदर भी देखता रहा हूँ। मैं अपने पिता से कहता कि कुत्ते के पास हरमोनियम तो है नहीं, कान है बजा देता है। अगर गंजा आदमी नंगे सिर मिल जाए तो भी लोग अपशगुन समझते हैं। उन पंडितों को दादू दयाल जी नंगे सिर मिले तो पंडितों ने सोचा कि हम तो महात्मा के दर्शन करने आए थे लेकिन अपशगुन हो गया है फिर उन्होंने सोचा कि प्रायश्चित कर लेते हैं। पंडितों ने दादू दयाल के सिर में ठोला लगाकर पूछा, ''अरे भाई! दादू का डेरा कहाँ है?'' दादू जी ने इशारे से बता दिया कि यही डेरा है। पंडित डेरे में इंतजार करने लगे।

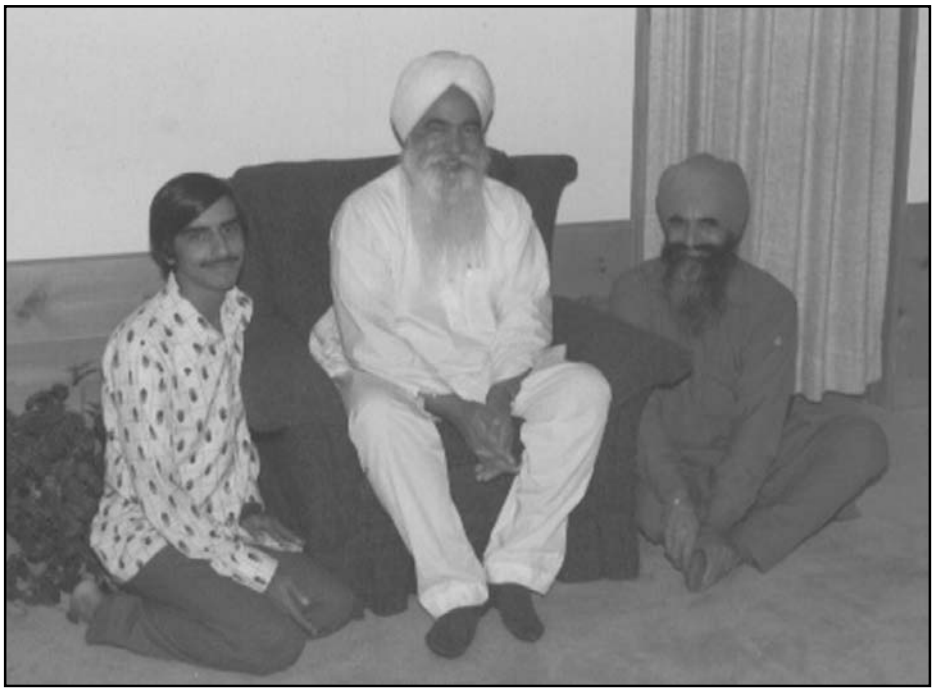

डेरे में सतसंग के लिए दादू जी का इंतजार हो रहा था। पंडितों ने प्रेमियों से दादू जी के बारे में पूछा तो प्रेमियों ने बताया कि दादू जी अभी यहाँ आने वाले हैं। जब पंडितों ने देखा कि वही महात्मा आकर सतसंग सुनाने लगा है जिसके सिर पर हमने ठोले लगाए थे, पंडित बहुत शर्मिन्दा हुए।

दादू दयाल जी बहुत ही नम्रता वाले थे। दादू जी ने सतसंग में कहा अगर हम दो पैसे की हांडी भी खरीदते हैं तो हम उसे भी खड़काकर देखते हैं। आप लोगों ने तो गुरु के ऊपर सब कुछ न्यौछावर करना है, गुरु की खोज करना कोई गुनाह नहीं होता। नाम लेने से पहले आप चाहे जितनी मर्जी खोज करें लेकिन जब नाम ले लिया है फिर वह महात्मा आपको जो रास्ता बताता है आप उस रास्ते पर चलकर देखें आपका फायदा होगा।

मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा के चरणों में जाने से पहले आप उसकी हिस्ट्री पढ़े कि इसने दस-बीस साल अभ्यास किया है कोई कुर्बानी की है! दुनिया में कोई भी चीज प्राप्त करनी हो तो मेहनत करनी पड़ती है। माता पीड़ा सहकर ही बच्चा पैदा करती है। मोती निकालने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। सोना खान खोदकर ही निकाल सकते हैं।

दुनिया की किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। क्या परमात्मा की भक्ति ही ऐसी है जो बिना मेहनत किए या गुरु की आज्ञा माने बिना ही प्राप्त हो जाएगी? मेहनती ही गुरु की आज्ञा मानता है। भजन के चोर सिर्फ दिखावे के लिए आँखें बंद करके बैठते हैं और आगे-पीछे भी दौड़ते हैं।

रसल प्रकिन्स एक कहानी सुनाया करता है कि एक मालिक के दो नौकर थे। एक नौकर तो जब मालिक आता तो वह उसके आगे-पीछे दौड़ता। जब मालिक चला जाता तो वह खाकर सो जाता कोई काम नहीं करता। दूसरा नौकर मालिक हाजिर हो या न हो खूब मेहनत करता। अब आप सोचकर देखें! मालिक किस पर खुश होगा? मालिक उसी पर खुश होगा जो मालिक की आज्ञा मानता है, मालिक को हाजिर-नाजिर समझता है। गुरु उसी पर खुश होगा जो गुरु को हाजिर-नाजिर समझता है ईमानदारी से अपना भजन-सिमरन करता है गुरु उसकी लाज रखता है।

पूर्ण महात्मा खुद कमाई करता है और अपने सेवको से भी कहता है कि बेटा! तुम कमाई करो भजन के चोर न बनों। वह खुद भी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से बचा होता है और अपने सेवकों को भी यही उपदेश देता है कि आपकी देह में पाँच चोर हैं। सब सन्तों ने इन पाँचों का जिक्र किया है। किसी सन्त ने

इन्हें पाँच चोर, किसी ने इन्हें पांच डाकु तो किसी ने इन्हें पाँच लुटेरे कहकर बयान किया है। जिस सृजनहार परमात्मा ने हमारी सृजना की है उसने हमारी देह में अमृत रखा हुआ है। ये पांचों चोर उस अमृत को लूट रहे हैं।

अमृत लूटे मनमुख नी बूझे।

हमें पता नहीं कि हम लुटे जा रहे हैं। घर के अंदर एक लुटेरा दाखिल हो जाए तो वह घर में कोई सामान नहीं छोड़ता। जिसके घर के अंदर पाँच लुटेरे घुस जाएं और घर का मालिक सोया हो तो अब चोरों की मर्जी है कि वे घर में क्या छोड़ते हैं? गुरु रविदास जी ने कहा है:

मृग मीन भृंग कुंचर पतंग एक दोख विनाश।
पांच दोख असाध जामें ताकी के तक आस।।

मृग को कानों का विषय होता है। शिकारी लोग जंगल में जाकर बाजा बजाते हैं जिसे घंडा हेरी का शब्द भी कहते हैं। मृग तो इंसान के नजदीक नहीं जाता लेकिन मृग उस शब्द पर मस्त होकर शिकारी की गोद में अपना सिर रख देता है। कानों के विषय ने मृग की जान ले ली। शिकारियों ने मृग की बोटी-बोटी करके उसे हांडियो में पकाया।

पंतगे को आंखो का विषय होता है। वह प्रकाश का आशिक है, जब दीपक का प्रकाश होता है तो पतंगा यह नहीं देखता कि यह प्रकाश किसका है? वह उस प्रकाश पर अपनी जान दे देता है, पंख जला लेता है; आंखों के विषय ने उसकी जान ले ली।

मछली को जुबान का चस्का है। शिकारी लोग कुंडी में गोश्त लगाकर दरिया, समुद्र या गहरे तालाब में फेंक देते हैं। मछली सब्र

नहीं करती वह गोश्त लगी कुंडी को अपने गले में फँसा लेती है। शिकारी लोग उसे बाहर खींच लेते हैं कीमा-कीमा करके उसे हांडी में चढ़ना पड़ता है। जुबान के चस्के ने मछली की क्या हालत की?

हाथी को काम का विषय होता है। हाथी बहुत ही ताकतवर जानवर है। हाथी को पकड़ने वाले लोग बहुत गहरा गड्ढा खोद लेते हैं, उस गड्ढे के ऊपर मामूली सी छत डाल देते हैं और कागजों की बनावटी हथनी बनाकर छत पर खड़ी कर देते हैं। काम के वश होकर हाथी सच्चाई को नहीं समझता, उस गड्ढे में गिर जाता है, भूखा-प्यासा रहता है; कमजोर हो जाता है। महावत लोग उसे अंकुश मार-मारकर बाहर निकाल लेते हैं। काम की कमजोरी की वजह से इतना बड़ा जानवर इंसान को कंधे पर उठाता फिरता है।

मैं बताया करता हूँ कि काम इंसान को अंधा कर देता है। कामी बेशर्म हो जाता है, वह रिश्ता ही भूल जाता है। एक-एक दोष ने इनकी क्या हालत की। इंसान में ये पांचों दोष हैं यह किस तरह बच सकता है? हम अजीब ही अक्ल के मालिक हैं इनसे बचने के लिए जप-तप, पूजा-पाठ करते हैं। मंदिर, मस्जिद व धर्मस्थानों के चक्कर भी लगाते हैं और भी कई किस्म के साधन जैसे जलधारे करते हैं, धूनियां तपाते हैं। हम ये सारे उपाय इन पाँचों विषयों को बस में करने के लिए ही करते हैं लेकिन ये बस में होने की बजाय और ज्यादा भड़क उठते हैं।

आपको ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जो कहते हैं कि हमने इन पाँचो को अपने बस में किया हुआ है। जैसे हम किसी जहरीले साँप को पकड़कर टोकरी में बंद कर दें तो उसका गुस्सा और बढ़ जाता है मौका मिलते ही वह सांप डंक मारने से बाज नहीं आता। यही हालत हमारे मन की है। हम समझते थे कि मन हमारे बस में

आ गया है लेकिन जब भोगों की आंधी चलती है तो यही मन हमें प्रेरित करके बस्तियों में ले आता है।

मन अंदर से ही समझाता है कि मैंने तो परमात्मा से आज्ञा ले ली है, बहुत से लोग ऐसा भी ढोंग रच लेते हैं कि हमें अंदर गुरु ने प्रेरित किया हुआ है। मैं बताया करता हूँ कि गुरु को कोई भी बुद्धु नहीं बना सकता। जो अंदर का स्वरूप काम करता है बाहर के स्वरूप को पूरा ज्ञान होता है। हम मन के पीछे लगकर गुरु को धोखा देने की कोशिश करते हैं कि आपने हमें अंदर हुक्म दिया।

गुरु तो हमें दिन-रात इन अपवित्र चीजों से बचाता है। वह खुद बचा हुआ पुरुष है और हमसे कहता है, ''देखो बेटा! गण-गंधर्व जिसने भी इसे चखकर देखा वह पछताया। एक बार दिमाग को विषय-विकारों की जहर चढ़ जाए तो जिंदगी भर नहीं उतरती।'' सहजो बाई प्यार से कहती है कि हमने उसकी शरण में जाना है जो खुद बचा हुआ है; बचा हुआ ही बचा सकता है।

ऐसे गुरु तौ बहुत हैं धूत धूत धन लेहिं।
सहजो सतगुरु जो मिलै, मुक्ति धाम फल देहि।।

ईंट उठाओ तो ऐसे गुरु निकलते हैं जो अपना बोझ सेवकों पर रखते हैं। कबीर साहब कहते हैं गुरु लोभी है, शिष्य लालची है ये दोनों ही दाँव खेलते हैं। शिष्य कहता है कि चलो सौगंध खाने के लिए गुरु मिल गया है। गुरु कहता है कि यह कुछ न कुछ चढ़ावा तो चढ़ाएगा ही।

मैं बताया करता हूँ कि जो महात्मा 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं वे खुद अपनी कमाई में से लंगर में डालते हैं यही उनकी निशानी है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घाल खाए कुछ हत्थो दे, नानक राह पछाणे से।

आज तक सन्तमत में जितने भी **पूर्ण महात्मा** आए हैं वे सदा यही कहते आए हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मर जाऊं मांगू नहीं अपने तन के काज,
परस्वार्थ के कारणे मोहे न आवे लाज।

पूर्ण महात्मा हमारे पैसे को पवित्र करवाने के लिए किसी गरीब की मदद करवा देंगे लेकिन अपने जातिय खर्च के लिए वह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाएंगे। वे अपने दस नाखूनों से मेहनत करके खेती करें, दुकानदारी करें चाहे नौकरी करें यही उनकी निशानी है। **पूर्ण महात्मा** आत्माओं की मुफ्त सेवा करते हैं जैसे सूरज हर किसी को अपनी तपिश मुफ्त देता है।

परमात्मा गरीब-अमीर सबको मुफ्त हवा देता है। परमात्मा उनके लिए दरवाजा खोलता है जो खुद साध-संगत की सेवा करता है और अपनी कमाई में से लंगर में भी डालता है। कबीर साहब ने ताना बुनकर अपनी जिंदगी गुजारी। रविदास जी ने जूतियां बनाकर अपना गुजारा किया। महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी ने भी अपनी पेंशन में से ही गुजारा किया। महात्मा सेवक से भजन की ही आशा रखते हैं। वे कहते हैं कि भजन करके लाओ। उनके दिल में भजन की कुदरती चाहना होती है।

कुटुँब जाल जित तित रुपो, पशु पक्षी नर माहि।
सहजो गुरु भडकी बचे, निगुरा उरझत जाहि।।

सहजो बाई कहती हैं, ''कुटुम्ब में ही फँसे थे तो कुटुम्ब में ही जन्म लेते रहे। कभी पशु तो कभी पक्षी बने। गुरु ने बाँह पकड़कर मुझे निकाल लिया।'' गुरु नानकदेव जी भी कहते हैंः

गुरु जिन्हां न चेतया मन अपने सचेत।

जो लोग यह कहते हैं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं वे अपने मन में सुचेत हुए फिरते हैं, वे गलती में हैं। निगुरे की हामी कौन भरेगा, उन्हें जन्म-मरण के दुख से कौन निकालेगा?

बार बार नाते मिलै, लख चौरासी माँह।
सहजो सतगुरु ना मिलैं, पकरि निकासै बाँह।।

मुसलमानों की पवित्र किताब में भी आता है कि जब हम गलतियां करते हैं तो निचली योनियों में चले जाते हैं। सहजो बाई भी यही कहती है कि हमने चौरासी लाख योनियों में जाकर पता नहीं कितनी पत्नियाँ बनाई, कितने पति बनाए कितनी बार बच्चे पैदा किए और कितनों को छोड़ा। कितनी योनियां भोगी आगे का भी पता नहीं कि कितनी योनियां भोगनी हैं? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि किसी भी योनि में शब्द-रूपी मुक्तिदाता गुरु नहीं मिला। अगर शब्द-रूपी गुरु मिला होता तो क्या हम चौरासी लाख योनियों में जाते? अगर सच्चे गुरु को पकड़कर हमने चौरासी लाख योनियों में ही जाना है तो ऐसे गुरु के पास जाने का क्या फायदा।

जन्म जन्म हर संग ही, मिलि रहो आठौ याम।
सहजो गुरु के बिन मिले, पायो ना विश्राम।।

बेशक सारी दुनिया कहती है कि परमात्मा सर्वव्यापक है हर घट में बैठा है। जिस तरह धरती के अंदर कहीं दस-बीस फुट तो कहीं सौ फुट गहरा पानी है लेकिन प्यास उन्हीं की बुझती है जो नल या कुँआ खोदकर वहाँ से पानी निकाल लेते हैं।

आप कहती हैं कि जब हम हाथी, घोड़ा या कोई पक्षी बने तब भी हमारे अंदर परमात्मा व्यापक था लेकिन किसी ने हमारी रक्षा

नहीं की। इस जन्म में गुरु चरनदास जी मिले उन्होंने बाँह पकड़कर मुझे यहाँ से निकाल लिया; गुरु के घर में भगवान है।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त परमात्मा से बड़े तो नहीं होते लेकिन उन्होंने भक्ति करके परमात्मा को अपने प्यार की जंजीरों में बांधकर खुश कर लिया होता है। प्यारा बेटा अपने पिता से जो चाहे करवा लेता है, सन्त भी परमात्मा के प्यारे पुत्र होते हैं। प्यारा पुत्र वह है जो पिता का कहना मानता है। ऐसा नहीं कि घर में मौत हो गई या व्यापार में घाटा पड़ गया तो गुरु को गालियां निकालने लगे कि ऐसे गुरु को छोड़ो। गुरमुख वह है जो भाणां मानता है।

महाराज सावन सिंह जी अपनी जिंदगी का वाक्या सुनाया करते थे कि उनका बत्तीस साल का लड़का ओवरसियर था। उन्होंने ब्यास स्टेशन पर ही उसका श्वास पूरा करवाया। उन्होंने सोचा अगर डेरे लेकर गया तो बीबी रूक्को बाबा जयमल सिंह जी से कहेगी कि इसे बचाओ। इससे मेरी गुरमुखता में फर्क पड़ता था। जब लड़के ने अपना आखिरी साँस पूरा किया उस समय मैंने अपने दिल को टटोलकर देखा कि उस समय न कोई खुशी थी न कोई गमी थी। यह मेरे सतगुरु बाबा जयमल सिंह जी की ही दया थी।

महाराज कृपाल बताया करते थे कि जब घर में कोई वस्तु लाते तो उनका लड़का सारी वस्तु पर हाथ रख लेता कि इसे मैं ही खाऊंगा। आप कहते तू जितना मर्जी खा ले अगर बचेगी तो हम खाएंगे लेकिन तू सब्र से खा। जब वह लड़का बीमार हुआ तो आपने अपनी पत्नी से कहा कि तू यह न कहना कि इसका ईलाज नहीं करवाया। तू जो अच्छे से अच्छा डाक्टर कहे उसे बुलवा लेता हूँ आखिर वह लड़का शरीर छोड़ गया।

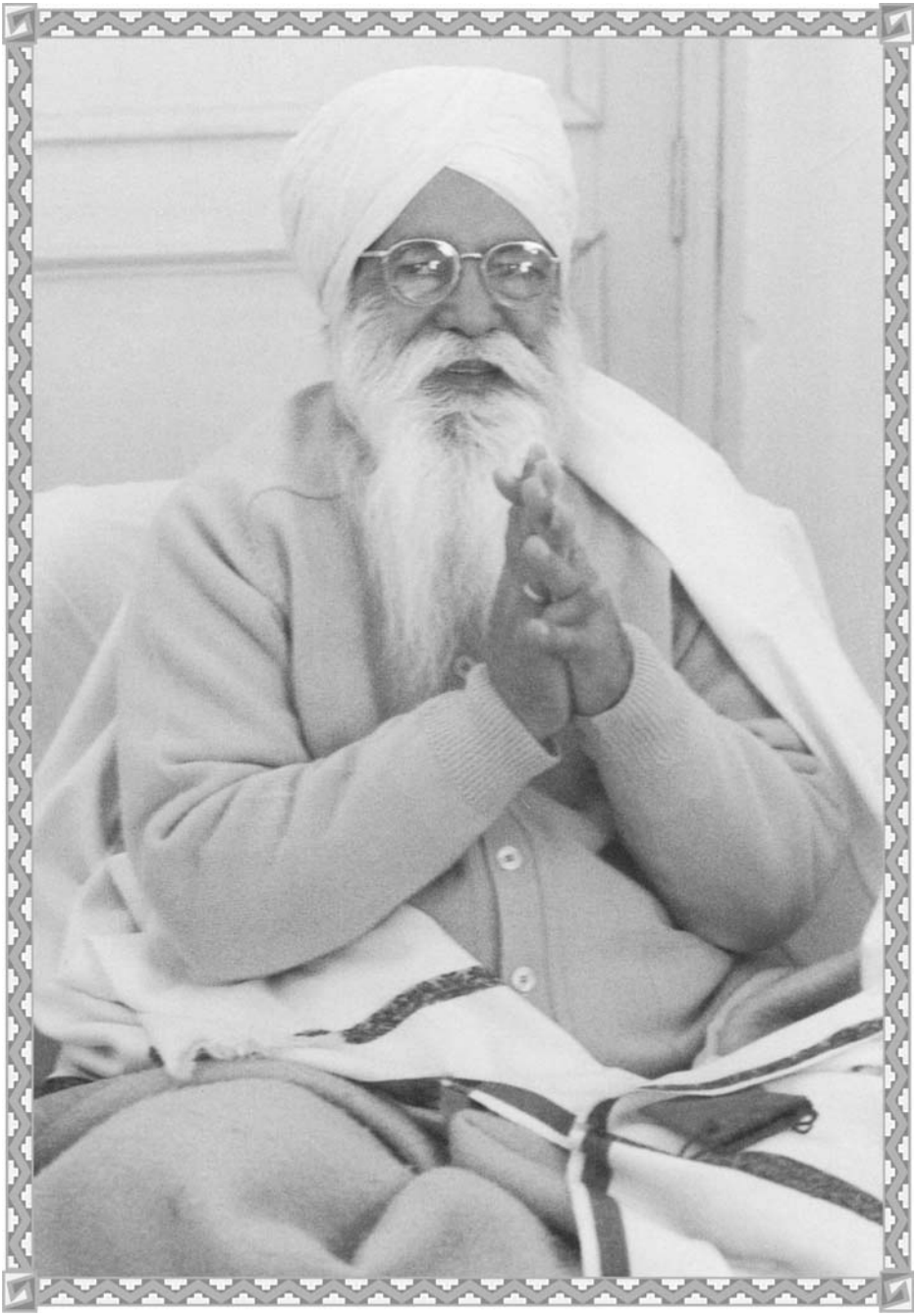

जब श्मशान में उस लड़के की आखिरी रस्म क्रियाक्रम करने के लिए गए तो महाराज कृपाल के चेहरे पर कोई गम नहीं था। ताई जी का घरवाला राजा राम सर्राफ आर्य समाज का मुखिया था उसके दिल पर इस बात का बहुत असर हुआ कि इनका लड़का गुजर गया है लेकिन इनके चेहरे पर कोई गम नहीं। यह वाक्य ही किसी **पूर्ण महात्मा** के शिष्य हैं। महाराज कृपाल को देखकर ही राजा राम सराफ महाराज सावन सिंह जी के चरणों में जाकर उनसे नामदान प्राप्त किया। आखिर तक महाराज कृपाल और राजा राम सराफ का अटूट प्यार रहा।

सहजो गुरु पूरण मिलै, शिश मैला घट चित्त।
मेह वरसै कालरा जिमीं, खेत न उपजै छित्त।।

आप कहती हैं कि **पूर्ण महात्मा** मिल जाए अगर शिष्य मैला हो तो इस तरह है जैसे बंजर भूमि के ऊपर बेशक कितनी भी बारिश क्यों न हो जाए उस पर कुछ भी नहीं उगता।

मलयागिरि के निकट जो, सब द्रुम चंदन होय।
कीकर सीसौं चीढ़ तरु, हुए न कबहूँ होय।।

आप कहती हैं कि चंदन का पेड़ सबके अंदर अपनी खुशबू भर देता है लेकिन कीकर और चीड़ के पेड़ के अंदर खुशबू नहीं जाती ये गुण को ग्रहण ही नहीं करते। कबीर साहब कहते हैंः

सतगुरु पूरा क्या करे जे सिक्खन में चूक,अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।

सिख माटी सिख पाथरा, सिख लकड़ी सम जोय।
सहजो गुरु पारस लगै, कैसे कंचन होय।।

सहजो बाई कहती हैं अगर शिष्य मिट्टी जैसा है, लकड़ी जैसा है, उसका दिल पत्थर जैसा है बेशक गुरु पारस है लेकिन शिष्य

उससे लगकर किस तरह सोना बन सकता है? क्योंकि पारस में यह गुण है कि लोहे को लग जाए तो लोहा सोना बन जाता है

शिष्य सराई तेल बिना, वाती भी नहिं माहि।
सहजो गुरु दीपक मिले, चांदन होसी नाहि।।

आप प्यार से कहती हैं कि जिस शिष्य की ऐसी हालत है जैसे लैम्प के अंदर न तेल है न उसके कल पुर्जे ठीक हैं बेशक उसे प्रकाश रूप गुरु मिल गया है लेकिन उस लैम्प के अंदर किस तरह रोशनी होगी?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस लैम्प के कलपुर्जे ठीक हैं जिसमें तेल भी है बत्ती भी है सिर्फ माचिस लगाने की देर होती है लेकिन जिस लैम्प को अभी ठीक करना है उसमें तेल बत्ती लगानी है तो समय लगता है, हमारी भी ऐसी ही हालत है।'' मैं बताया करता हूँ कि सच्चे शिष्य का गुरु के पास जाना खुष्क बारूद की तरह होता है।

सहजो गुरु समरथ कला, सर्वदेश सब अंग।
कोई कैसा शिष्य हो, सब पर गैरै रंग।।

सहजो बाई कहती हैं कि सन्त-सतगुरु गरीब नवाज होते हैं।

जैसो तैसो पातकी आवे गुरु की ओट,
गाठी बांधी संसय न परखे खर खोट।

गुरु जानता है कि मैंने इसे नाम के साथ जोड़ दिया है। जो लोग प्रेम भरोसे से अपना भजन-अभ्यास करते हैं उनके अंदर प्रकाश भी हो जाता है और शब्द की आवाज भी आनी शुरु हो जाती है। मसला उनके प्यार-भरोसे और मेहनत का है।

सहजो गुरु रंगरेज सा, सब ही को रंगिदेत।
जैसा तैसा वसन हो, जो कोई आवै श्वेत।।
सहजो गुरु दर्शन दियो, पूरि रहे सब ठौर।
जहां तहां गुरु ही लखे, दृष्टि न आवै और।।
देखत ही आनंद भए, सदगुरु पहुँचे आय।
भवसागर दुख रूप सों, सहजो लई बचाय।।

सहजो बाई कहती है कि जब हमारी आत्मा में गुरु के दर्शन करके सरूर आना शुरू हो जाता है तो खुशी प्रकट होती है। मेरे ऊँचे भाग्य हैं गुरु मुझे दर्शन दे रहा है या वचन सुना रहा है। उस समय समझें कि हमारी मैलें धुलनी शुरू हो गई हैं। दर्शन करने से जितने पाप कटते हैं उतने पाप कमाई से भी नहीं कटते।

दर्शनों की बहुत महानता होती है। जब सन्त-सतगुरु इस संसार से ओझल हो जाते हैं जो कमाई वाला शिष्य अंदर जाता है आप उसकी तरफ देखें! वह सोते-जागते और चलते-फिरते हुए भी रोता है। जब उससे बात करते हैं तो उसकी आँखों से अपने आप ही पानी गिरना शुरू हो जाता है।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि एक प्रेमी ने मुझसे सवाल किया कि आप इतना क्यों रोते हैं? मैंने कहा उनकी दया से यह ज्ञान हुआ है कि दर्शनों से जो फायदा होता था अब वह फायदा होना हट गया है। दर्शनों में बहुत ही आनन्द होता है। दर्शनों से बहुत पाप कट जाते हैं।

सन्त मुए क्या रोईए जो अपने गृह जाए,
रोवो साकत बापुरे जो हाटो हाट बकाए।

मेरे अपने ही गांव का वाक्या है जिसे मैं आम संगत में बताया करता हूँ। यह वाक्या मैगजीन में छप चुका है। हमारे गांव के एक आदमी को अबोहर में चलती हुई कार में महाराज कृपाल के दर्शन हुए। हमारे गांव के इस आदमी का नाम हरनाम सिंह था। हरिजन जाति का यह आदमी शराब और बीड़ी-सिगरेट पीता था। महाराज जी कार से जा रहे थे, उस मन मोहनी मूरत से आँखें चार हुई तो वह मूरत आँखों में समा गई। अबोहर हमारे गांव से पचास मील दूर है वह दूसरे दिन यहाँ पहुँचा।

आम लोगों के गुजरने का रास्ता मेरे खेत में से ही होता था। हरनाम सिंह अपनी रोजी-रोटी एक गधी पर सामान लादकर कमाता था। वह मेरे साथ बात करने लगा तो उसकी गधी मेरे खेत में चरने लगी। उसने मुझसे कहा कि आपको सन्तों-महात्माओं से मिलने का शौक रहता है आप बहुत कहानियां भी सुनाते रहते हैं। कल मैंने एक बहुत ही प्रभावशाली चेहरा देखा, वह कार में जा रहा था। वह चेहरा अब भी मेरी आँखों के आगे घूम रहा है। उसका चेहरा गुरु नानकदेव जी की तरह था।

वहाँ से एक और आदमी निकल रहा था उसने कहा कि तू अपनी गधी इनके खेत में चरवाने के लिए इन्हें ऐसी बातें सुना रहा है। मेरे दिल में उसकी एक-एक बात घर कर रही थी। कुछ दिनों बाद वह खेत में फसल काट रहा था उसने अपने लड़के को मुझे बुलाने के लिए भेजा। मैं भागकर उसके पास गया, मेरे जाते ही वह लुढ़क गया। मैंने उसका सिर अपनी जांघ पर रखकर पूछा, ''हरनाम क्या बात है?'' उसने कहा, ''मैंने अबोहर में जिसके दर्शन किए थे, वह हवाई जहाज लेकर आ गया है और मैं जा रहा हूँ। वह एक साल बाद यहाँ आएगा।''

यह सच्चाई है कि हुजूर महाराज जी एक साल बाद वहाँ आए। अब आप सोचकर देखें! कार की रफ्तार कितनी तेज थी? दर्शनों ने उसकी जिंदगी बना दी। कबीर साहब कहते हैंः

जब तू आवें आंख में आंख झांप मैं लू,
न मैं देखूं और को न तुझे देखन दूं।

अगर तू आँखों में आ जाए तो मैं आँखें बंद कर लूं। न मैं किसी को देखने दूं और न मैं खुद ही देखूं। आप भजनों में पढ़ते हैंः

मैं पलकां च रख लां छुपाके तैनूं,
तूं दिल वाले वेहड़े च आ के तां देख।

तू एक बार मेरे दिल के आँगन में आकर देख! मैं तुझे पलको में छिपाकर आँखे बंद कर लूंगा, मैं तेरी कद्र करूंगा।

चरणदास के चरण पर, सहजो वारे प्रान।
जगत व्याधि सों काढ़िकर, राखी पद निर्वान।।
सहजो गुरु महिमा कही, पढ़ि सुनि हियो सिराय।
उपजै गुरु की भक्ति दृढ, दुविधा दुर्मति जाय।।

सहजो बाई ने सारी बानी कहकर आखिर में एक ही बात कही है कि मैंने आपको **पूर्ण महात्मा** की महिमा, गुरु की कद्र, गुरु के मिलाप की कथा सुनाई है। जो इसे प्यार से पढ़ेगा, सुनेगा और अपनी जिंदगी में अपनाएगा वह समझ ले कि मैं मुक्ति के द्वार पर पहुँच गया हूँ। गुरु की कद्र उसे होगी जिसके हृदय में गुरु का प्यार जागता है जो गुरु के हुक्म की पालना करता है।

सन्त नामदान के वक्त कहते हैं, ''आप मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों की कद्र करें इससे आपको बहुत फायदा होगा।''

किसी ने गुरु रामदास जी से पूछा कि आपने मन को कैसे बस में किया? आपने कहाः

प्रेम बाणी मन मारया।

गुरु ने मुझे प्यार का तिनका दिया, प्यार की बूंद मेरे अंदर बरसाई। उस प्यार से मन बस में आ गया। वे तीर इस तरह के नुकीले हैं जिसे लग जाए निकलते नहीं।

माथे पीर शरीर जलत है कर्क कलेजे माही।

गुरु साहब कहते हैं कि गुरु नामदान देते समय 'शब्द- रूप' होकर अंदर बैठा है अगर दर्शन नहीं होते तो माथे में दर्द होता है। दिल जलता है प्रेमी की ऐसी हालत हो जाती है।

किसी ने राबिया बसरी से पूछा कि आपको कैसे पता लगता है कि गुरु रूप परमात्मा आ गया है? राबिया बसरी ने कहा, ''पता लग जाता है जब मेरे दिल में कसक उठती है तो आँखे अपने आप बंद हो जाती हैं, आँखों से पानी आना शुरू हो जाता है। मैं उस समय अपना अभ्यास शुरू करती हूँ।''

प्यारेयो! गुरु शिष्य के अंदर प्यार का पौधा लगाता है सतसंग का पानी देता है। **पूर्ण महात्मा** नाम देकर बेफिक्र नहीं होता। सतसंग भजन की बाड़ है। हमारे परमात्मा गुरु कृपाल ने कहा है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठें। उस समय तक तन को खुराक न दें जब तक आत्मा को खुराक नहीं दे लेते। तन की खुराक अन्न है और आत्मा की खुराक 'शब्द-नाम' की कमाई है।''

हमें भी चाहिए कि जो कुछ सहजोबाई ने अपने शब्द में समझाया है इस पर अमल करें अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

***

DVD-210

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सन्त कल्लरपट

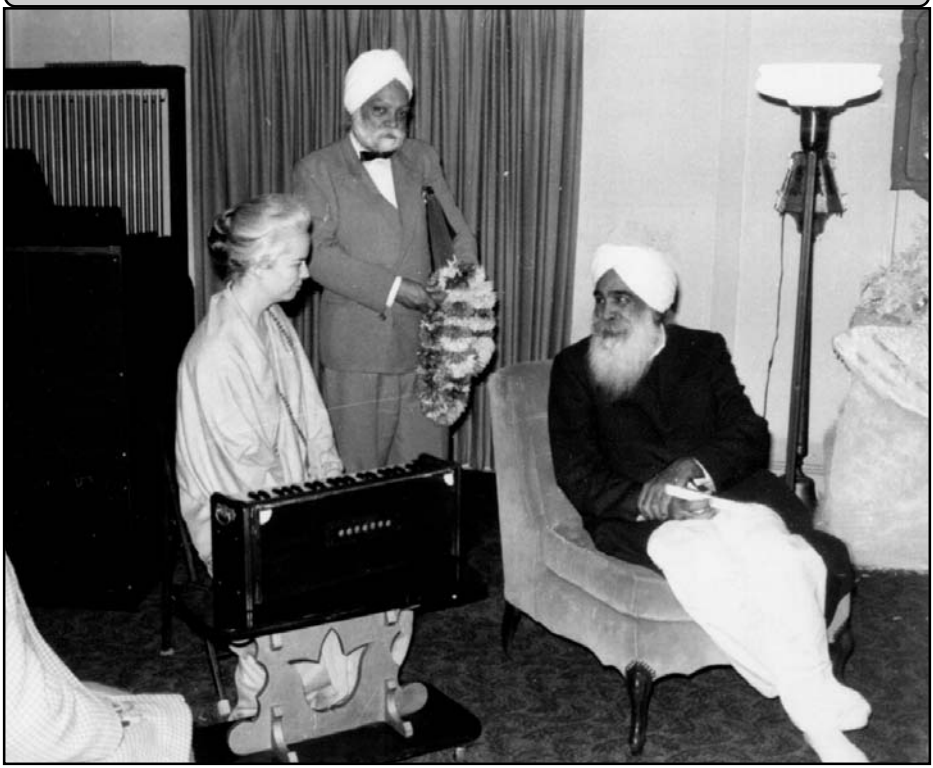

यह साखी सन्त कल्लरपट की है। सन्त कल्लरपट रियासत पटियाला में झूठा गुरु बनकर लोगों को लूटकर खाता था। जब उसका अंत समय आया तो वह प्रेत बना। किसी मांदरी ने उसे चीरकर मौहमदी के शरीर में प्रवेश कर दिया। कल्लरपट काफी समय मौहमदी के शरीर में रहकर उसे दुख देता रहा। कुछ समय बीत जाने के बाद मौहमदी को सतगुरु कृपाल सिंह जी की सोहबत मिली। मौहमदी ने 'नामदान' प्राप्त किया और अपना सारा दुख ब्यान किया कि मुझे अंदर ही कोई चीज खाए जा रही है।

परमपिता कृपाल ने दया करके उसे सारा हाल बताया कि जो आदमी किसी भी आडंबर के जरिए लोगों को लूटकर खाता है या लोगों से अपना आदर-मान करवाता है तो काल उसे नर्कों में डालकर दुख देता है।

जो कल्लरपट मौहमदी के शरीर में था हुजूर के वचन सुनकर पिछले समय की बातें करने लगा कि मुझे दुनिया बहुत मानती थी। जब लोग मुझे गुरु जी कहते तो मुझे बहुत खुशी होती थी। आज मुझे झूठा गुरु बनकर की गई गलतियों की समझ आई कि मैं खुद मुक्त नहीं हुआ और अब मैं प्रेत बनकर लोगों को दुख देता हूँ।

कल्लरपट मौहमदी के शरीर में बोल रहा था कि यमदूत ने पकड़कर उसे धर्मराज के दरबार में पेश कर दिया। धर्मराज ने हुक्म दिया, ''उस नर्क में एक गंदा छप्पड़ है। वहाँ पहले भी एक झूठा गुरु है। इसके भी हाथ-पैर बांधकर वहाँ फैंक दो, झूठे गुरु को साँप काट-काटकर खाएंगे। इसने मातलोक में जादू के जरिए लोगों को लूटकर खाया है, लोगों को अपना सेवक बनाया है इसलिए इसकी गति नहीं हुई और न ही इसके सेवकों की गति हुई है। अब इसके सेवक साँप बनकर इसका मांस तोड़-तोड़कर खाएंगे और इससे हिसाब लेंगे।''

सन्त कल्लरपट मौहमदी के शरीर में चीखें मार रहा था कि सतगुरु जी आप मुझे बख्श दो, मैं माफी मांगता हूँ अगर आपके दर पर आकर भी मैं प्रेत बना रहा तो मुझे कौन बख्शेगा? सन्त बेइंसाफ नहीं होते। सन्तों के दरबार में दया है, आप मुझ पर दया करके मुझे इस गंदी योनि से छुड़वाएं।

हुजूर ने दया करके प्रशाद दिया, मौहमदी ने प्रशाद खाया। कल्लरपट प्रेत की योनि से छूट गया। सन्त दयालु होते हैं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

भाई केहर सिंह

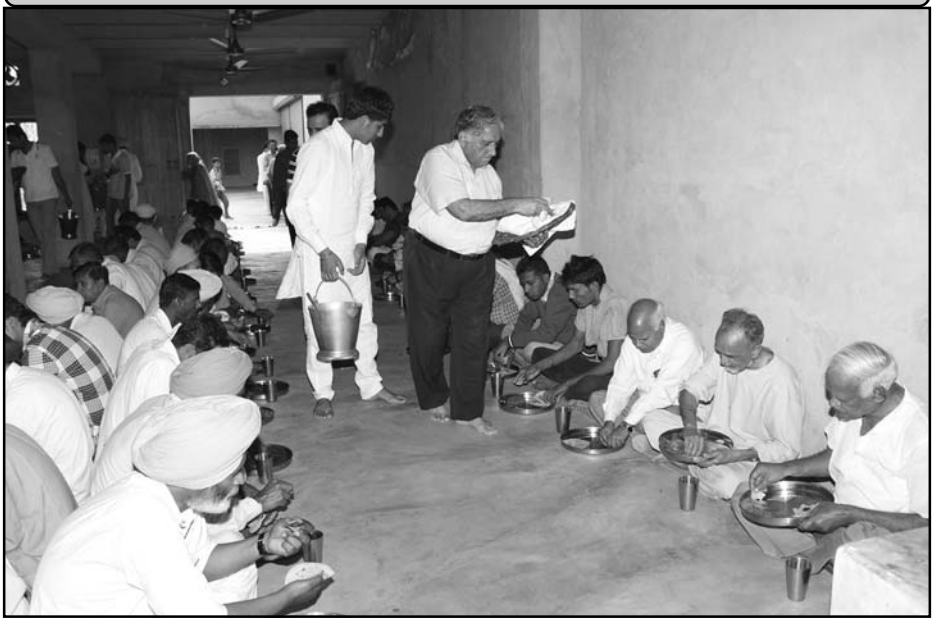

परमपिता कृपाल बहुत दयालु थे। मैं उनकी दयालुता बयान नहीं कर सकता। एक बार की बात है कि मेरे ही गांव का एक प्रेमी केहर सिंह आया, वह एक अच्छा आदमी था। वह आते ही सतगुरु पर मोहित हो गया। वह कभी-कभी सन्तमत के बारे में बहस किया करता था और मुझसे कहता, ''इंसान का गुरु इंसान कैसे हो सकता है? इंसान भगवान नहीं हो सकता।'' मैंने उसे कई बार बताया कि ये सब बातें तेरा मन कर रहा है। जब कभी तुझे गुरु के दर्शन होंगे तेरे मुँह में जुबान नहीं रहेगी।

सन्त 'नाम' देते हुए गलती नहीं करते, जब भी जीव उनकी शरण में आता है उन्हें ज्ञान हो जाता है कि इसके सिर के ऊपर कितना वजन है! भाई केहर सिंह के कर्म भी बहुत कठोर थे। हुजूर

चाहते थे कि यह कई सतसंग सुने फिर इसे 'नाम' मिले क्योंकि सतसंग से कई कर्म कट जाते हैं लेकिन केहर सिंह चाहता था अगर मैंने यह मौका हाथ से निकाल दिया तो फिर यह समय हाथ नहीं आएगा मेरे लिए कोई भी मौका नहीं। उसने हुजूर के आगे बहुत नम्रता से कहा, ''मैंने बहुत पाप किए हैं, अपने ऊपर बहुत जुल्म किए हैं लेकिन आज मुझे यकीन हो गया है कि मुझे बख्शने वाला आ गया है।'' फिर केहर सिंह ने यह तुक पढ़कर सुनाईः

नाम विसार करे रस भोग, सुख सुपने ही तन में रोग।

हुजूर ने हँसकर कहा, ''जब तुझे पता है कि बानी यह कहती है तो इस पर चलता क्यों नहीं? जो लोग मालिक की बंदगी के बिना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें इस संसार मंडल में सुख नहीं मिलता वे चिन्ता की आग में सड़ते हैं, मरकर भूत-प्रेत बनते हैं और नर्कों में सड़ते हैं।'' जब हुजूर ने ये वचन कहे तो केहर सिंह ने पूछा, ''हुजूर! इस संसार मंडल में सारे ही अमीर-गरीब लोग चिन्ता की चिता में सड़ रहे हैं। किसी को शरीर की चिन्ता है, किसी औरत को पति का दुख है तो किसी पति को औरत का दुख है फिर नर्क में क्या हालत होगी?''

हुजूर महाराज ने कहा भाई केहर सिंह! अगर मैं तुझे अपनी जुबानी सुनाऊंगा तो तूने सच नहीं मानना। तुम आँखे बंद करो तो तुम्हें नर्कों का हाल नजर आएगा। जब केहर सिंह ने हुजूर के हुक्म के अनुसार आँखे बंद की तो हुजूर ने केहर सिंह को नर्क का पूरा हाल दिखाया।

केहर सिंह अभी नर्क का हाल देख रहा था कि उतनी ही देर में वहां पाँच-छह यमदूत आए जो आते ही केहर सिंह को मारने

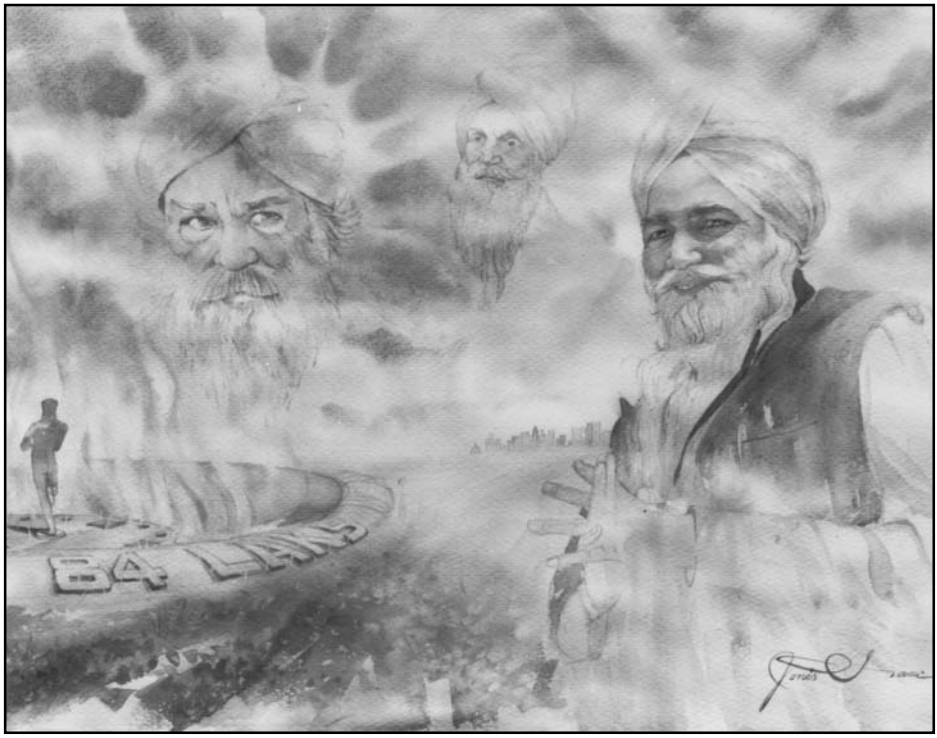

लगे। केहर सिंह ने कहा, ''मैंने यहाँ कोई चोरी नहीं की तो तुम मुझे क्यों मार रहे हो?'' उन यमदूतों ने धर्मराज का लिखा हुआ हुक्म दिखा दिया कि तुम्हारी इतनी सजा बाकी है। केहर सिंह कोई जवाब नहीं दे सका। यमदूतों ने केहर सिंह की जीभ को कड़े से नथ लिया और उसे पशुओं की तरह लेकर चल पड़े फिर आगे एक बहुत बड़े नर्क में डाल दिया, वहाँ पत्थर आग की तरह तप रहे थे, उन पत्थरों पर चलने वाले रबड़ की तरह गिर रहे थे। वहाँ पर और भी अनेकों रूहें तड़प रही थी।

इससे आगे एक और नर्क था जहाँ रूहों के पैरों में सूएं गड़े हुए थे और उनके सिर के ऊपर बहुत भारी-भारी पत्थर रखे हुए थे। जब रूहों ने दुखों से घबराकर यमों से पानी मांगा तो यमों ने

पानी के बदले खून और पस पीने के लिए दिया। पस भी इतनी गरम थी कि आग की तरह सड़ रही थी। जब केहर सिंह को पीने के लिए पस दी तो उस पस का दूध बन गया। केहर सिंह ने पेट भरकर दूध पिया क्योंकि केहर सिंह ये कौतुक परमपिता कृपाल की दया से देख रहे थे। परमपिता कृपाल ही उन्हें ये कौतुक दिखा रहे थे। केहर सिंह ने उन रूहों से कहा कि तुम भी मेरे सतगुरु कृपाल का नाम लो तो पस का दूध बन जाएगा। जब वे रूहें हुजूर महाराज का नाम लेने लगी तो यमों ने उनकी जीभें निकाल ली ताकि ये रूहें सतगुरु का नाम न ले सकें।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए। वहाँ आदमी और औरतों का आधे से ज्यादा शरीर जमीन में गढ़ा हुआ था। वहाँ यमदूत कौवों की शक्ल में उन्हें तोड़-तोड़कर खा रहे थे और भी कई तरह की सजा दे रहे थे। चारों तरफ से हाय! हाय! की आवाज आ रही थी। एक बहुत बड़ा जंगल है जहाँ आग के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आ रहा था वहाँ हजारों रूहें दानो की तरह भूनी जा रही थी; उन रूहों के ऊपर बहुत भारी-भारी पत्थर रखे हुए थे। रूहों ने गर्मी से घबराकर पानी मांगा तो यमों ने पानी की बजाय उनके मुँह में आग की धारें डाली। जब केहर सिंह के मुँह में आग डाली गई तो वह आग पानी बन गई।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए। वहाँ बूढ़ियां और नौजवान औरतें घुटनों तक जमीन में गढ़ी हुई थी। उनकी बाँहें ऊपर करके बांधी हुई थी और जीभ रस्सी से खींचकर बाहर की तरफ बांधी हुई थी। उनकी छाती के ऊपर बड़े-बड़े पत्थर लटकाए हुए थे। सिर के ऊपर तपाकर पत्थर रखे हुए थे। उनकी इन्द्रियों में से पस नीचे की तरफ बह रही थी। जो औरतें अपने हक के अलावा

विषय भोगती रही हैं उनकी यह हालत है। यमदूत लोहे की सलाखें गर्म करके उनके शरीर पर दाग रहे थे।

यहाँ से केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहां पर रूहों को तपते हुए पत्थरों पर लिटाया हुआ था। उनके ऊपर लोहे का बेलन चलाकर खून निकाला जा रहा था और भी कई तरह की सजाएं दी जा रही थी।

फिर केहर सिंह को अगले नर्क में ले गए जहाँ आदमी और औरतें घुटनों तक जमीन में गड़े हुए थे। उन्होंने मातलोक में पक्षियों का माँस खाया था अब यमदूत पक्षियों की शक्ल में उनका माँस तोड़-तोड़कर खा रहे थे। वहाँ केहर सिंह ने सतगुरु को याद किया कि मेरी रक्षा करें। वहाँ सतगुरु कृपाल सिंह जी महाराज ने केहर सिंह का शरीर पत्थर का कर दिया, जिससे उस पर यमों का जोर नहीं चल सकता था।

सारी रूहें हाय! हाय! कर रही थी। यम उन्हें आग में गर्म करके चाबुक मार रहे थे। उन रूहों का रोम-रोम आग की तरह जल रहा था। उसके बाद उन्हें तपते हुए कड़ाहे में डाला जाता था फिर उस कड़ाहे में मसाला डालकर सब्जी की तरह पकाकर यम उनका मांस खाते थे लेकिन जब केहर सिंह को उस कड़ाहे में डाला तो तपता हुआ कड़ाहा ठंडा हो गया। यमों ने सोचा! इसके पीछे किसी काबिल फकीर की ताकत है यह हर सजा से बच जाता है।

वहाँ से केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहाँ बारीक मिर्चें पीसकर रूहों की आँखों में डाली जा रही थी। केहर सिंह को एक छोटे से दरवाजे में से निकालने की कोशिश की गई उस दरवाजे में एक फुट लंबा-चौड़ा रास्ता था। केहर सिंह लेटकर उस दरवाजे

में से निकल गया। केहर सिंह के पैर अभी दरवाजे से बाहर ही थे कि यमदूतों ने दरवाजा बंद कर दिया, केहर सिंह की टांगे कट गई। फिर केहर सिंह ने परमपिता कृपाल को याद किया, याद करते ही उसकी टांगे साबुत हो गई।

वहाँ से केहर सिंह को एक और नर्क में ले गए। जहाँ खंभे आग की तरह तप रहे थे, रूहों को उन खंभो से लिपटाया जा रहा था। कई रूहें पक्षियों की शक्ल में उलटी लटकी हुई थी। केहर सिंह ने पूछा, ''इन्होंने क्या जुर्म किया है?'' यमदूतों ने बताया, ''इन रूहों ने मातलोक में जन्म लेकर पक्षियों का माँस खाया था, अब इन्हें उस जुल्म की सजा मिल रही है।''

फिर केहर सिंह को उससे अगले नर्क में ले गए वहाँ बाजार आग की तरह जल रहे थे। वहाँ रूहों को नंगे पैर चलाया जा रहा था। वहाँ कई रूहें रबड़ की तरह पिघल रही थी और उनके ऊपर तपते हुए बड़े-बड़े पत्थर फैंके जा रहे थे। उन्होंने केहर सिंह को किसी और रास्ते से निकाला। केहर सिंह ने पूछा, ''बाकी रूहें उधर जा रही हैं लेकिन मुझे दूसरे रास्ते से लेकर क्यों लेकर जा रहे हो?'' यमों ने बताया, ''उस रास्ते से वे रूहें जाती हैं जिन्होंने युगों के हिसाब से पत्थरों के नीचे रहना है।''

यमों ने केहर सिंह से कहा कि तू बहुत बातें करता है तेरे अंदर क्या खासियत है? केहर सिंह ने कहा, ''तुम मुझे मार नहीं सकते क्योंकि मेरा सतगुरु कृपाल है जिसके हुक्म से यह सब कुछ हो रहा है अगर तुम मेरे साथ नाजायज करोगे तो मैं मातलोक में जाकर ये सारी बातें महाराज कृपाल से कहूंगा; आप जैसे हजारों जीव उनकी दरबानगी करते हैं।''

केहर सिंह ने यमों से पूछा कि यहाँ जीवों को इतनी सख्त सजा क्यों दी जाती हैं? यमों ने कहा कि हम तुम्हें नहीं बता सकते, तू धर्मराज से पूछ लेना। जब केहर सिंह धर्मराज के पास गया तो धर्मराज ने कहा, ''तू यहाँ क्यों आया है?'' केहर सिंह ने कहा कि यहाँ रूहों को इतनी सख्त सजाएं क्यों दी जाती है इन्होंने क्या पाप किए हैं? धर्मराज ने कहा कि इन रूहों ने मातलोक में सन्त-फकीरों को कई तरीकों से दुख दिए हैं। अब इन रूहों को युगों के हिसाब से तपते कड़ाहे और तपते पत्थरों के नीचे सड़ते रहना है।

फिर केहर सिंह को दूसरे नर्क में ले गए। वहाँ जमीन में घास फूंस की जगह तीखे सुए गाढ़े हुए थे। रूहों को करोड़ो फुट ऊपर ले जाकर उन तीखे सूओं पर फैंका जाता था, कई रूहों का शरीर उन सूओं पर गिरते ही दानों की तरह बिखर जाता था। जब केहर सिंह को भी यह सजा देने लगे तो केहर सिंह ने सतगुरु कृपाल को याद किया कि इस मुश्किल वक्त से बचाएं। जब केहर सिंह ने प्रार्थना की तो पलक झपकते ही सतगुरु जी वहाँ पहुँच गए। सतगुरु ने दूर से ही खड़े होकर दाँये हाथ का इशारा किया, नर्क ठंडे हो गए; यमदूत भाग गए फिर परमपिता कृपाल केहर सिंह को साथ लेकर मातलोक में आ गए।

यह सारा हाल केहर सिंह ने कई प्रेमियों को बताया अगर आज मुझे सतगुरु के दर्शन न होते तो मुझे भी ये नर्क भोगने पड़ते क्योंकि मैंने बहुत पाप किए थे। सतगुरु ने दया करके मुझे थोड़े से समय में दिखा दिया कि जीव जो भी पाप करता है उसका फल अवश्य भोगता है। कुछ दिनों बाद केहर सिंह ने चोला छोड़ दिया। हुजूर ने नाम तो उसे तभी दे दिया था। हुजूर ने बड़ी दयालुता से उसे अपने चरणों में जगह दी, अंत समय में उसकी संभाल की।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 7,8,9,10 व 11 जनवरी 2015 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली(पश्चिम) मुम्बई-400 067
फोन-098 33 00 4000

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

2, 3, 4, 5 व 6 फरवरी 2015

27, 28 फरवरी व 1 मार्च 2015

31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2015